(64)

आक्रमण के सैद्धांतिक दृष्टिकोण या उपागम।
Theoretical Approaches to Aggration.

व्यक्ति आक्रमणकारी व्यवहार क्यों करता है, आक्रमण के आधार तत्व (bases) क्या है अथवा आक्रमण के कौन-2 से कारक (factor) है, इस सम्बंध में निम्नलिखित सिद्धांतों या दृष्टिकोणों का उल्लेख Feldman (1955) ने अपनी पुस्तक 'समाज मनोविज्ञान' में किया है।

1. मूल प्रवृति सिद्धांत (Instinct Theories).
2. कुण्ठा आक्रमण सिद्धांत (Frustration - Aggration Theory)
3. सामाजिक शिक्षण सिद्धांत (Social Learning theory.

1. मूल प्रवृति सिद्धांत (Instinct Theory).

आक्रमण तथा हिंसा के सम्बंध में दो तरह के मूल प्रवृति सिद्धांत मिलते हैं। एक सिद्धांत का प्रतिपादन Freud (1920) ने किया। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में दो तरह के मूल प्रवृतियाँ पायी जाती है जिसे जीवन मूल प्रवृति (Life instinct) तथा मृत्यु मूल प्रवृति (death instict) कहते है। जीवन मूल प्रवृति को 'Eros' तथा मृत्यु मूल प्रवृति को 'Thanatos' कहा गया है। पहली मूल प्रवृति रचनात्मक तथा स्नेहपूर्ण व्यवहारों का स्रोत (source) है। जबकि दूसरी मूल प्रवृति ध्वंसात्मक एवं घृणापूर्ण व्यवहारों का। अतः इस सिद्धांत के अनुसार आक्रमण आधार मृत्यु मूलप्रवृति है। इस मूल प्रवृति की आत्मगत अभिव्यक्ति (subjective catharsis) के कारण व्यक्ति अपने आपको पीड़ा पहुँचाता है और कभी-2 आत्महत्या तक कर लेता है। दूसरी ओर वस्तुगत अभिव्यक्ति (objective catharsis) के कारण वह दूसरें को पीड़ा पहुँचाता है और हत्या तक कर देता है। अतः फ्रायड के अनुसार आक्रमण या उग्रता का कारण मृत्यु मूल प्रवृति है।

दूसरे सिद्धांत का प्रतिपादन लौरेन्ज (Lorenz) 1966) ने किया। लौरेन्ज (1966) को उनके महत्वपूर्ण कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार (Nonel Prize) दिया गया। यद्यपि यह सिद्धांत फ्रायड की बहुत सी बातों का समर्थन करता है, फिर भी दोनों के संरचनाओं में (machanism) में अंतर है। फ्रायड ने आक्रमण को ध्वंसात्मक (discons...) माना है, किन्तु लौरेन्ज ने इसे अनुकूली (adaptive) माना है। लौरेन्ज ने पशुओं का अध्ययन किया और कहा कि वे अपने आक्रमणकारी व्यवहारों के माध्यम से अनेक आवश्यक कार्यों को सम्पन्न करके समायोजन या अनुकूलन स्थापित करते हैं। पशुओं पर किए गए अध्ययनों के आधार पर उन्होंने मानव व्यवहारों को समझने का प्रयास किया। और उन्होंने मुख्य रूप से दो बातों को समझने की कोशिश की :-

(क) एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की जान क्यों लेता है?

इस समस्या की व्याख्या करते हुए बताया कि आक्रमण के समय खतरा (danger) के प्रति दो प्रकार की प्रतिक्रिया होती है :- लड़ना (fighting) या भागना (flight)। कमजोर पशु भाग जाते हैं और सबल पशु भिड़ जाते हैं। मनुष्य के साथ एक सुविधा यह है कि उसके पास लड़ने के लिए प्रभावशाली हथियार है। इसलिए दूसरी जातियों (Species) से भिन्न एक मानव दूसरे मानव की जान ले लेते हैं

(ख) मूल प्रवृति आक्रमणशील शक्ति कैसे बनती है? इस समस्या के सम्बंध में लौरेन्ज ने बताया कि आक्रमणशील शक्ति हमेशा बनी रहती है और जमा होते रहती है। जब वातावरण में कोई प्रतिकूल उत्तेजना उपस्थित रहती है तो वह संचित शक्ति सक्रिय हो जाती है और व्यक्ति आक्रमणशील व्यवहार (violent behaviour) करने लगता है। यहाँ उग्रता तथा आक्रमण की मात्रा संचित शक्ति की मात्रा पर निर्भर करती है।

2. कुण्ठा-आक्रमण सिद्धांत (Frustration-Aggression Theory)

यह सिद्धांत कुंठा या निराशा को आक्रमण का कारण मानता है। सर्वप्रथम डोलार्ड आदि (1983) ने बताया कि कुंठा के कारण व्यक्ति आक्रमणशील व्यवहार करता है। यह सिद्धांत दो अभिधारणाओं (assumptions) पर आधारित है :-

(i) कुण्ठा से हमेशा किसी न किसी प्रकार का आक्रमण घटित होगा तथा

(ii) आक्रमण सदा कुण्ठा का परिणाम होता है। लेकिन आधुनिक अनुसंधानों से पता चलता है कि कुण्ठा से सदा आक्रमण की उत्पत्ति नहीं होती है और आक्रमण के पहले हमेशा कुंठा उत्पन्न नहीं होता है।

कुंठा-आक्रमण सिद्धांत के सम्बंध में बरकोविज (1984) का विचार सही है। उनके अनुसार कुण्ठा द्वारा उत्पन्न क्रोध की उपस्थिति में आक्रमणशील व्यवहार करने की तत्परता उत्पन्न होती है। अब व्यक्ति आक्रमणशील प्रतिक्रिया करेगा या नहीं; यह बात आक्रमणशील संकेतों (aggressive cues) पर निर्भर करती है। आक्रमणशील संकेतों का अर्थ - वे उत्तेजनाएं है, जो अतीत में क्रोध, आक्रमण या आक्रमण उत्तेजकों (instigators) से सम्बंधित रही हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आक्रमण तथा उग्रता की व्याख्या करने में बारकोविज द्वारा परिमार्जित कुंठा-आक्रमण सिद्धांत अधिक संतोषजनक प्रतीत होता है। फिर भी यह सिद्धांत आक्रमण की केवल आंशिक व्याख्या ही कर पाता है।

—०—

२. सामाजिक शिक्षण सिद्धांत. Social Learning Theory.

इस सिद्धांत के अनुसार- आक्रमणशील व्यवहार सीखा हुआ या अर्जित होता है। इसके समर्थकों में बन्डुरा (Bandura) 1973 तथा सिलमैन 1978 के नाम उल्लेखनीय है। इस सिद्धांत के कई अभिधारणाएं है:-

(i) आक्रमणशील व्यवहार प्रत्यक्ष प्रबलन (direct reinforcement) तथा दंड (punishment) के आधार पर सीखा जाता है। जैसे- यदि किसी बच्चे के आक्रमणशी व्यवहार करने पर उसकी इच्छा की पूर्ति हो जाती है, तो अवश्य ही वह आक्रमणशील तथा उग्र व्यवहार सीख लेता है।

(ii) आक्रमणशील व्यवहार को विकसित करने में प्रत्यक्ष प्रबलन की अपेक्षा अप्रत्यक्ष प्रबलन का हाथ अधिक होता है। Bandura (1973) के अनुसार आक्रमणशील व्यवहारों को सीखने का मौलिक साधन प्रतिरूपण (modeling) है। बच्चे अपने माता-पिता या किसी दूसरें व्यक्ति को नमूना (model) मान लेते है और उनके ऐसे व्यवहारों का अनुसरण करते है जो सुखद या लाभप्रद (rewarding) होता है।

(iii) जन साधन से आक्रमण से प्रतिरूपण (modeling from media aggression) के आधार पर भी आक्रमण की उत्पत्ति होती है। अध्ययनों से पता चलता है कि जिन प्रयोज्यों को उग्र व्यवहार (violent behaviour) टेलिविजन, सीनेमा द्वारा दिखाया गया उनमें आक्रमण अधिक पाया गया। उग्र प्रदर्शन के निरीक्षण तथा परवर्ती आक्रमण (subsequent aggression) के बीच गहरा सह-सम्बंध पाया गया है। एरॉन (Eron, 1982) के अनुसार टेलिविजन उग्रता का प्रभाव आक्रमण पर पड़ सकता है और यह भी संभव है कि आक्रमणशील बच्चें टेलिविजन उग्रता का निरीक्षण कर सकते है।

* क्षेत्र अध्ययन (field study) से भी इस विचार की पुष्टि होती है। लेकिन आक्रमण का निरीक्षण हमेशा उस व्यवहार का कारण नही होता।

सामाजिक शिक्षण (Social learning) के आधार पर आक्रमण या हिंसा की सही व्याख्या काफी अंशों में हो जाती है:—

(i) यह सिद्धांत आक्रमण को सीखा हुआ या अर्जित मानता है, जबकि मूल प्रवृति सिद्धांत इसे वंशागत मानते हैं।

(ii) यह सिद्धांत इस विश्वास पर आधारित है कि आक्रमण तथा अन्य को रोका जा सकता है। इस सिद्धांत का यह उपयोगी पक्ष है, जो दूसरे सिद्धांतों से गौण होता है।

(iii) यह सिद्धांत अन्य सिद्धांतो की अपेक्षा अधिक समग्र तथा संतोषप्रद

(iv) सामाजिक शिक्षण सिद्धांत का एक गुण यह भी है कि इसके आधार अनुमोदित हिंसा (Sanctioned violence) की व्याख्या संभव होती है। जैसे:- युद्ध के समय सैनिकों को यह अधिकार तथा छूट होता है कि वे दूसरे पक्ष के लोगों के प्रति हिंसक व्यवहार कर सके हैं। मजे कि बात यह है कि हिंसा के लिए उन्हें सरकार तथा समाज या सम्प्रदाय की ओर से पुरस्कार भी प्राप्त होता है। असल में यह अनुमोदित हिंसा अधिकारी (authority), विकृत व्यक्तित्व (Pathological personality), आदर्श सहाय (normative support) आदि के प्रति आज्ञाकारिता पर आधारित होती है। यह

(v) यह सिद्धांत न केवल आक्रमण के कारणों को बतलाता है, बल्कि उसके निराकरण या रोकथाम के उपायों की भी व्याख्या करता है लेकिन सभी परिस्थितियों के आक्रमण की व्याख्या सामाजिक शिक्षण के आधार पर भी संभव नहीं है।

— o —